भाग-4

मादाएँ अपने नर पार्टनर में क्या देखती हैं?

विपुल कीर्ति शर्मा

इस लेख श्रृंखला में अब तक हम देख चुके हैं कि विविध जीवों में नर या मादा अपने सेक्स पार्टनर की खोज किस तरह करते हैं, पार्टनर की खोज में अपने विविध संवेदनशील अंगों का किस तरह उपयोग करते हैं, अपने प्रतिद्वन्द्वियों से किस तरह पेश आते हैं, पार्टनर को रिझाने के लिए क्या कुछ करते हैं, जिसमें तोहफे देने से लेकर, मनमोहक खुशबू का इस्तेमाल करने तक सब शामिल हो जाता है। अब हम बात करने वाले हैं कि मादाओं की नरों से क्या अपेक्षाएँ होती हैं, पढ़िए इस लेख में ।

मादाएँ अपने नर पार्टनर में क्या देखती हैं, इसकी शुरुआत इन्सानों से ही करते हैं। स्त्री और पुरुष प्यार, रोमांस या सेक्स के लिए जिस पार्टनर की तलाश में होते हैं, उस पार्टनर में वे कुछ चीज़ें ज़रूर देखना चाहते हैं। जैसे - खूबसूरती, रंग, कद-काठी, आकर्षक पहनावा, आभूषण, केश विन्यास। फिर इसके बाद - भाव-भंगिमा, वाक-पटुता, विनोद-प्रियता, हँसमुखपन, संवेदन-शीलता, मधुर वाणी, सामाजिक-आर्थिक हैसियत आदि।

आप इन दोनों सूचियों पर नज़र डालेंगे तो समझ आएगा कि इनमें से कुछ गुण तो जन्मजात मिलते हैं, कुछ गुण या हुनर सीखे जाते हैं और कुछ सामाजिक दबाव की वजह से अपेक्षाओं में शामिल हो गए हैं। आप यह भी जानते ही हैं कि आकर्षक दिखने की इस जद्दोजहद से ही दुनिया में श्रृंगार प्रसाधनों, वस्त्रों और शरीर सौष्ठव (जिम) के उपकरणों का व्यापार अपने चरम पर है। खूबसूरती की सूची में कुछ भी शामिल हो सकता है - चाहे काली त्वचा को गोरी करना, चाहे गंजों के सिर पर बाल उगाना, या चाहे बुढ़ापे को रोकना। यहाँ आप यह भी मानकर चल सकते हैं कि आकर्षक दिखने का एक प्रमुख उद्देश्य है – रोमांस, प्यार और यौन सम्बन्धों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त पार्टनर को प्राप्त करना। चलिए, इन्सानों की बातें तो काफी हुईं, अब अन्य प्राणियों की बात करते हैं।

अन्य प्राणियों में

अन्य जीवों को भी अपना पार्टनर खोजने के लिए काफी पापड़ बेलने पड़ते हैं। कुछ जीवों में नर और मादा में लैंगिक द्विरूपता (sexual dimorphism) काफी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यानी उस जीव में नर मादा से भिन्न दिखते हैं। यदि आप अपने आसपास के जीवों से शुरू करेंगे तो मुर्गा, तोता, मोर, बब्बर शेर तक आपको कई उदाहरण दिखाई दे जाएँगे। गिर के नर शेर की गर्दन के पास के लम्बे-लम्बे बाल जिसे अयाल भी कहते हैं, शेरनी के लिए आकर्षण हैं। अनेक पक्षियों में भी किसी एक लिंग के सुन्दर पंख, उनके उड़ने, उछलने-कूदने की कलाबाज़ियाँ और मोहक दृश्य विपरीत सेक्स को लुभाते हैं। यह निष्कर्ष निकालना सहज और सरल है कि प्रथम प्रभाव तो हम कैसे दिखते हैं, इसका ही होता है।

जैसा कि हमने शुरू में ही कहा कि इन्सान तो कृत्रिम सौन्दर्य प्रसाधनों का उपयोग करके भी अपने आपको खूबसूरत बना और दिखा सकते हैं किन्तु अन्य जीवों का रूप-रंग तो बनावटी नहीं होता, वह प्रकृति प्रदत्त होता है। उनका वह रूप उत्तम स्वास्थ्य और जैविक सक्षमता का वास्तविक और विश्वसनीय प्रतीक होता है। वे सम्भावित साथी को पसन्द आने में प्राकृतिक बाह्य बनावट या रंग-रूप पर निर्भर होते हैं।

जीवों की सूची में कुछ ऐसे जीव भी शामिल हैं जिनकी नज़र कमज़ोर होती है या हालात ऐसे हों कि बहुत दूर तक देख पाना कठिन है, जैसे निशाचर जीव या बिल बनाकर रहने वाले जीव या गहरे समुद्रों में पाए जाने वाले प्राणी। ऐसे सभी हालातों में अपने पार्टनर की तलाश सीधे देखकर नहीं की जा सकती, वहाँ साथी की तलाश अन्य तरीकों जैसे - आवाज़, गन्ध, कम्पन या प्रतिदीप्ति से की जाती है।

जीवों के व्यक्तित्व पर शोधकार्य

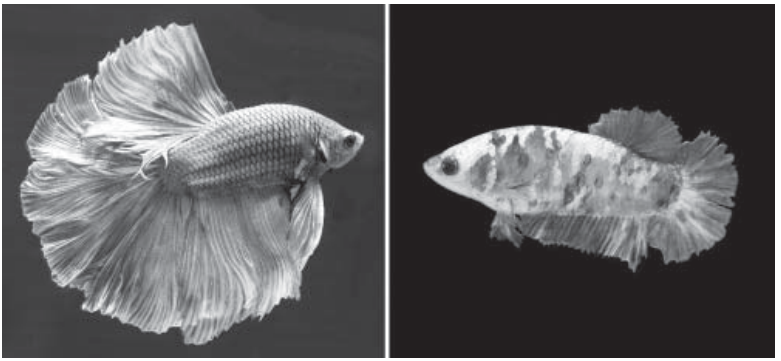
जन्तुओं के व्यक्तित्व पर आधारित पारिस्थितिकी का अध्ययन करने वाले अनेक शोधार्थियों का यह अवलोकन है कि प्रत्येक प्रजाति में कुछ सदस्यों के लक्षण एवं व्यवहार अन्य से भिन्न होते हैं। ये वे सदस्य हैं जिनमें शारीरिक सम्पन्नता के अलावा भी कुछ ऐसी विभिन्नताएँ व गुण मौजूद होते हैं जो उन्हें मादा से सेक्स के अधिक अवसर प्रदान करते हैं।

कुछ वर्षों पूर्व तक व्यवहार में विभिन्नता दर्शाने वाले गुणों को अमहत्वपूर्ण या अप्रभावी लक्षण कहकर टाल दिया जाता था। वैज्ञानिकों के अथक परिश्रम से एकत्रित हुए शोध के आँकड़ों के परिणामस्वरूप सामान्य से भिन्न व्यक्तित्व वाले सदस्यों पर अध्ययन 'प्राणि-व्यवहार' में नए अध्याय के

रूप में विकसित हुआ है। कई बार अप्रभावशाली लक्षण वाले सदस्य भी अगली पीढ़ी में अपने जीन सफलतापूर्वक पहुँचाने में सफल हो जाते हैं।

• बेट्टा मछलियाँ

मैंने अनेक प्रकार की मछलियाँ पाली हैं और फुर्सत से कई घण्टे उन्हें निहारने में भी बिताए हैं। उन्हीं में से एक थी सिआमीज़ फाइटिंग फिश (siamese fighting fish)। इस बेहद आकर्षक पंखों वाली मछली को, सजावटी मछली बेचने वाले दुकानदार 'बेट्टा' कहते हैं। इनका वैज्ञानिक नाम *बेट्टा स्प्लेनडेन्स* है। इनको दुकानों में प्रायः छोटी-सी बॉटल में अकेले देखा जा सकता है – बेहद खूबसूरत बेट्टा नर को भी। इनके प्राकृतिक निवास थाईलैंड (पुराना नाम स्याम) और दक्षिण-पूर्वी एशिया के अन्य पड़ोसी देश भी हैं। 19वीं सदी में स्याम में बेट्टा मछलियों की लड़ाई देखना एक लोकप्रिय शौक हुआ करता था। सम्राट एवं प्रमुख अधिकारी मछलियों को पालकर आक्रामक नर बेट्टा का युद्ध देखते थे। जंगली बेट्टा आम तौर पर जैतूनी या भूरे रंग की होती है। वयस्क होते नर की त्वचा पर यौनाकर्षक या आक्रामता के परिचायक गहरे चमकदार रंग बनना प्रारम्भ हो जाते हैं। जब ये मछलियाँ प्रसिद्धि पाकर यूरोप एवं अमेरिका पहुँचीं तो मछली प्रजनकों ने चयनात्मक प्रजनन करवाकर बेट्टा में गहरे लाल से पेस्टल नीले रंग एवं झबरीले पंख-पूँछ विकसित कर लिए। प्राकृतिक निवास में प्रायः पानी की कमी के कारण इनमें गलफड़ों के पीछे अतिरिक्त श्वसन अंग भी विकसित हो गए हैं। इन अंगों की सहायता से बेट्टा मछली कम ऑक्सीजन में भी



चित्र-1: *नर बेट्टा (बाएँ) को लम्बे पंखों, बड़े फ्रेम और अधिक चमकीले रंग के शरीर से पहचाना जाता है। वे अन्य नर बेट्टा के प्रति आक्रामक भी होते हैं। वहीं मादा बेट्टा (दाएँ) आकार में छोटी और बहुत कम आक्रामक होती हैं।*

सेहतमन्द रह सकती है। वह पानी की सतह से ऊपर आकर, हवा में भी श्वसन कर लेती है। प्रायः बेट्टा की इन आदतों के कारण अक्सर इन्हें छोटे बरतनों में भी पाला जाता है जो उचित नहीं है। आम तौर पर बेट्टा नर अकेले रहकर इलाके बनाते हैं। उस इलाके में अन्य नरों को फटकने भी नहीं देते। एक नर का इलाका तकरीबन 2.5 गेलन पानी के स्थान जितना होता है। शौक के लिए बेट्टा नरों की लड़ाई करवाने वाले लोग, बड़े शरीर और कड़े शल्क वाले नरों को चुनते हैं। छोटे पंख के नरों का प्रजनन के लिए उपयोग करते हैं।

बुलबुलों से घोंसले: नर बेट्टा पानी की सतह के ऊपर से हवा खींचकर मुँह के अन्दर म्यूकस के छोटे-छोटे गुब्बारे बनाते हैं। अनेक गुब्बारों से बबल नेस्ट का निर्माण होता है। बबल नेस्ट बनाना बेहद धीमा तथा थकाने वाला कार्य होता है। बबल नेस्ट के निर्माण के साथ ही, इलाके की रक्षा करने में भी नर बेट्टा कभी पीछे नहीं हटते। दो बेट्टा नरों की लड़ाई में कई बार कमज़ोर नर मर भी जाते हैं। नरों की आक्रामक लड़ाई में हारने वाला नर विनम्र व्यवहार एवं फीके रंगों वाले पंखों से अपने को पराजित घोषित कर देता है। चुपचाप तमाशा देखती और जासूसी कर रही मादा बेट्टा अब विजेता नर के साथ हो जाती है।

जब बबल नेस्ट का निर्माण पूर्ण हो जाता है तो नर गलफड़ों को रंगीन बनाकर और पंख फैलाकर मादा को आकर्षित करता है। मादा भी जब तैयार हो जाए तो शरीर को काला या गहरे रंग का बनाकर अपनी इच्छा ज़ाहिर कर देती है और नर की ओर तैरकर पहुँच जाती है। नर एवं मादा पास आकर तैरते हैं। प्रणय प्रदर्शन के लिए नर अक्सर मादा को काटता है एवं पंख से मादा को सहलाता है। इस दौरान मादा के कुछ शल्क (स्केल) भी निकल जाते हैं और पंख भी ज़ख्मी हो सकते हैं। नरों की आपसी लड़ाई के दौरान वे एक-दूसरे के पंखों को काटकर प्रतिद्वन्द्वी को तैराकी में नाकाबिल बना देते हैं। हारा हुआ नर अब ऐसी मादा को खोजने में जुट जाता है जिसने नरों की लड़ाई नहीं देखी हो। ऐसी कुँवारी अनुभवहीन मादा कमतर स्तर के नर के साथ जोड़ा बना लेती है।

व्यवहार के आधार पर बेट्टा नर तीन प्रकार के हो सकते हैं। तीनों प्रकार का वर्गीकरण तब समझ में आता है जब किसी नर बेट्टा के सामने एक नर-मादा का जोड़ा आ जाए। मादा की उपस्थिति में एक और नर को देखकर भड़क उठने तथा आक्रामक हो जाने वाले नर 'लड़ाकू' कहलाते हैं। कुछ दूसरे प्रकार के नर, नर-मादा के जोड़े को अपने सामने पाकर नर पर ध्यान न देकर, स्वयं भी उस मादा से इश्क लड़ाने लगते हैं। ऐसे नरों को 'प्रेमी' कहा जाता है।

तीसरे प्रकार के नर का व्यवहार नर-मादा जोड़े के प्रति मिश्रित होता है। कुछ लड़ाकूपन और कुछ आशिकाना। ये 'डिवाइडर' कहलाते हैं।

इन तीन प्रकार के नरों में से मादा किसे पसन्द करती है, इस पर वैज्ञानिकों ने शोध किया। बेट्टा मादा की पसन्द पर शोध के परिणाम अलग-अलग रहे। जंगली प्रकार की मादाएँ ऐसे नरों को पसन्द करती हैं जिनके घोंसले बड़े बबल से बने हुए हों। वे नर के बड़े आकार से प्रभावित नहीं होती हैं। जबकि पालतू मादाएँ बड़े आकार के नरों को पसन्द करती हैं। परन्तु यदि आकार एक-समान हो तो वे तीनों प्रकार में से किसे चुनेंगी? वे लड़ाकू और डिवाइडर की बजाय प्रेमी नर से जोड़ा बनाना पसन्द करती हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि लड़ाकू नर प्रायः प्रेमालाप के दौरान भी मादा को गम्भीर शारीरिक नुकसान पहुँचा सकते हैं।

• जापानी क्वेल

इसी प्रकार जापानी पक्षी क्वेल (बटेर) की मादाएँ कम आक्रामक नरों का चयन करती हैं जो मादा को पाने की होड़ में अपने से बड़े आकार के नरों से परास्त हो गए हों। ऐसे निर्बल नर दबंग और आतंकी नरों के समान साधन-सम्पन्न तो नहीं होते परन्तु मादा की पहली पसन्द बन जाते हैं। हिन्दी फिल्मों के दुष्ट खलनायकों के समान ही जापानी नर बटेर भी प्रेमालाप के दौरान मादा के पीछे

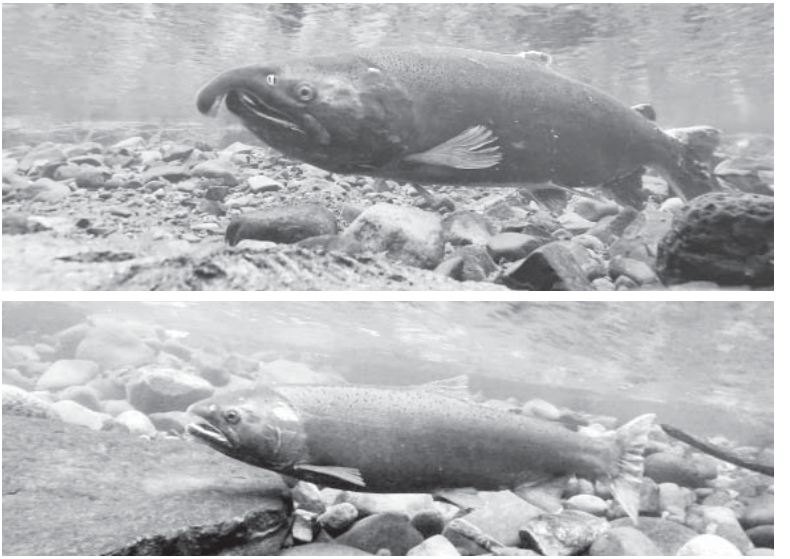


चित्र-2: *मादा जापानी क्वेल।*

पड़कर, मादा को लगातार तकलीफ देते हैं। नर मादा क्वेल के शरीर और सिर पर लगातार चोंच मारते हैं, परों को चोंच से पकड़कर मादा को घसीटते हैं और यहाँ भी आतंक खत्म नहीं होता है। वे बार-बार मादा की पीठ पर कूदते भी हैं। ऐसे अति-आक्रामक नरों से अगर मादा दूरी बनाए तो आश्चर्य नहीं होगा क्योंकि दबंग के इलाके के बाहर एक बेबस प्रेमी नर, उसका इन्तज़ार करता रहता है।

• कोहो सैल्मन

'व्यक्तित्व' को समझने के लिए वयस्क नर कोहो सैल्मन (coho salmon) एक उत्तम उदाहरण पेश करती है। ये वे मछलियाँ हैं जो लम्बी दूरी तक प्रवास करती हैं। ये एनाड्रोमस (anadromous) कहलाती हैं क्योंकि वयस्क मछली समुद्रों में



चित्र-3: *(ऊपर) हुक नोज़ नर कोहो सैल्मन, (नीचे) मादा कोहो सैल्मन। ये एनाड्रोमस मछली हैं, अर्थात् ताज़े और खारे पानी, दोनों में रहती हैं। हुक नोज़ नर के जबड़े का अगला सिरा नीचे मुड़कर हुक जैसा हो जाता है जिसमें नुकीले दाँत होते हैं। ये व्यवहार में आक्रामक व क्रोधी होते हैं।*

रहती हैं लेकिन अण्डे देने के लिए मीठे पानी की नदियों की ओर प्रवास करती हैं। कोहो सैल्मन के नर दो भिन्न शारीरिक संरचना और व्यक्तित्व वाले होते हैं। एक को 'जेक्स' कहते हैं और दूसरे को 'हुक नोज़'। जेक्स कहे जाने वाले नर आकार में छोटे, 30-40 से.मी. लम्बे होते हैं। अपने से बड़े नर, हुक नोज़ के इलाकों से घबराकर ये डरपोक नर, निर्जन स्थानों पर चुपके-चुपके इश्क लड़ाने में विश्वास करते हैं। बड़े आकार के नर हुक नोज़ समुद्र से मीठे जल तक पहुँचने के बाद सिर की तरफ से काले तथा बाकी शरीर से मरून या बरगंडी रंग के हो जाते हैं। जबड़े का अगला सिरा नीचे मुड़कर हुक जैसा दिखने लगता है जिसमें नुकीले दाँत होते हैं।

हुक नोज़ नर व्यवहार में आक्रामक व क्रोधी होते हैं तथा मादा पर बलपूर्वक तथा ज़बरदस्ती एकाधिकार जमाते हैं। अण्डों को निषेचित करते हुए हुक नोज़ नर के इलाके में यदि जेक्स आ जाते हैं तो वे मारे जाते हैं। मांसल शरीर एवं मर्दानगी भरी अदा वाले हुक नोज़ नर मादाओं की पहली पसन्द नहीं होते। मादाएँ मौका पाकर

जेक्स के साथ हो लेती हैं। वैज्ञानिकों ने देखा है कि जेक्स के साथ अण्डों को निषेचित करने के लिए वे मैथुन के दौरान ज़्यादा समय भी देती हैं।

* * *

उपरोक्त उदाहरणों से आपको शायद ऐसा लगे कि जन्तुओं का व्यक्तित्व आक्रामक या डरपोक प्रकार का ही होता है, किन्तु उनके व्यक्तित्व अनेक प्रकार के हो सकते हैं और व्यवहार में बहुत विविधताएँ होती हैं। प्रत्येक प्राणी के मिजाज़ और लुभा लेने की योग्यता को सख्त एवं कमज़ोर की ही श्रेणी में रखना न्यायसंगत नहीं होगा।



चित्र-4: *नर ज़ेब्रा फिंच (बाएँ) व मादा ज़ेब्रा फिंच (दाएँ)। शोध के अनुसार, मादा ज़ेब्रा फिंच नर पक्षियों के गीतों में ऐसे संकेत पहचान लेती हैं जो मानव कान के लिए समझ पाना अत्यन्त कठिन है।*

• ज़ेब्रा फिंच और ग्रेट टिट

मध्य ऑस्ट्रेलिया में पाई जाने वाली, भारतीय गौरैया के आकार के बराबर की चिड़िया ज़ेब्रा फिंच *(टेनियोपीजिया गुट्टाटा)* जोड़ा बनाने के लिए ऐसे साथी को तलाशती है जो ज़्यादा खोजी और घुमक्कड़ प्रकार का हो।

पूरे यूरोप तथा मध्य-पश्चिम एशिया व भारत के पहाड़ी घने जंगलों में पाई जाने वाली चिड़िया ग्रेट टिट बिलकुल ऐसा ही व्यवहार प्रदर्शित करती है। इनका वैज्ञानिक नाम *पेरस मेजर* है। बेतहाशा जंगल कटने और जलवायु परिवर्तन से इनके आशियाने भी तबाह हुए हैं और इनकी आबादी पिछले 10 वर्षों में 30 प्रतिशत तक गिरी है। ग्रेट टिट सामाजिक रूप से मोनोगेमस होती हैं अर्थात् नर एवं मादा टिट निष्ठावान जोड़ा बनाकर केवल आपस में ही सम्भोग करते हैं। फिर सन्तानोत्पत्ति के पहले और बाद में सम्मिलित रूप से बच्चों की परवरिश करते हैं। मतलब बायपेरेण्टल होते हैं। अण्डों और बच्चों की देखरेख वंशवृद्धि के लिए महत्वपूर्ण मुद्दा है। इसलिए मादा टिट प्रायः नरों का चुनाव करते समय गम्भीरता से उन्हें परखती है। मादा फिंच और नर ग्रेट टिट जो स्वयं खोजी प्रवृत्ति वाले होते हैं, वे वैसे ही साथी का चयन करते हैं।



चित्र-5: *मादा ग्रेट टिट। ये पक्षी मोनोगेमस होते हैं जो आम तौर पर एक जोड़ी में रहते हैं और दोनों माता-पिता मिलकर बच्चों का पालन-पोषण करते हैं।*

• मादा मकड़ियाँ

एरिनिडी फैमिली तथा *लारिनीओइड्स* जीनस की मकड़ियों (इन्हें ब्रिज मकड़ियाँ भी कहते हैं) में आक्रामक नर अधिक आक्रामक मादा से ही जोड़ा बनाते हैं और डरपोक नर डरपोक मादा से।

बेतरतीब जाले बनाने वाली मकड़ी *एनीलोसिमस स्टूडियोसस* के आक्रामक



चित्र-6: *मादा एनीलोसिमस स्टूडियोसस।*

नर डरपोक नरों को आसानी-से पराजित कर देते हैं। ऐसे आक्रामक नर जब आक्रामक मादा से मैथुन करने जाते हैं तो मैथुन के पूर्व ही प्रायः मादा के शिकार बन जाते हैं। स्वजाति भक्षण करके मादा आने वाली अन-आक्रामक पीढ़ी को उत्पन्न करने की बेहतर सम्भावनाएँ प्रदान करती है, जबकि डरपोक नर आक्रामक मादा से चुपचाप बगैर विघ्न डाले और मादा को बिना गुस्सा दिलाए, मैथुन करके चले जाते हैं। परन्तु जब आक्रामक नरों का सामना डरपोक मादा से होता है तो डरा-धमकाकर वे मैथुन में अधिक सफल होते हैं। इस प्रकार विपरीत यौन व्यवहार के बावजूद वे फलती-फूलती रहती हैं।

• मादा ओरंगुटान

ओरंगुटान पेड़ पर रहने वाले सबसे बड़े स्तनधारी होते हैं। इनकी तीन प्रजातियाँ इंडोनेशिया और मलेशिया के आसपास के जंगलों में पाई जाती हैं। जंगलों की असीमित कटाई से इनकी सभी प्रजातियाँ खतरे में हैं। ओरंगुटान नर एवं मादा में लैंगिक द्विरूपता बेहद साफ दिखती है। पूरी तरह से विकसित नर ओरंगुटान मादाओं की तुलना में दुगने आकार के होते हैं। वयस्क नर दो प्रकार के होते हैं। एक तो वो जिनमें गद्दीदार गाल के उभार



चित्र-7: *नर व मादा ओरंगुटान में लैंगिक द्विरूपता बेहद साफ दिखती है। वयस्क नर दो प्रकार के होते हैं। एक तो वो जिनमें गद्दीदार गाल के उभार 'फेलेंजेस' (phalanges) होते हैं और उनमें लम्बी और तीखी आवाज़ निकालने की क्षमता होती है। दूसरे वो जिनमें फेलेंजेस नहीं होते और लम्बी आवाज़ निकालने की क्षमता का भी अभाव होता है किन्तु वे लैंगिक रूप से सक्रिय, सन्तानोत्पत्ति कर सकने वाले तथा पिता के कर्तव्य निभाने वाले होते हैं।*

'फेलेंजेस' (phalanges) होते हैं और उनमें लम्बी और तीखी आवाज़ निकालने की क्षमता होती है। दूसरे वो जिनमें फेलेंजेस नहीं होते और लम्बी आवाज़ निकालने की क्षमता का भी अभाव होता है किन्तु वे लैंगिक रूप से सक्रिय, सन्तानोत्पत्ति कर सकने वाले तथा पिता के कर्तव्य निभाने वाले होते हैं।

कई बार नरों के बीच परस्पर संघर्ष होता है। मादा से भी हिंसात्मक ज़बरदस्ती होती है। मादा की पसन्द के कारण दो हमउम्र नर शिशुओं के पालन-पोषण में भी भेदभाव होता है। इससे उनका लैंगिक विकास और वयस्क होने की अवधि प्रभावित होती है। कुछ नर 30 वर्ष की उम्र में पूरी तरह से वयस्क होते हैं और कुछ नर इससे पहले ही वयस्क हो जाते हैं। वे नर जो जल्दी वयस्क हो जाते हैं, वे वयस्क मादाओं से बेहद ज़बरदस्ती करते हैं और आक्रामक हो जाते हैं। ऐसी कठिन परिस्थितियों में मादा यदि प्रेमालाप में पड़ने के पूर्व नरों के व्यवहार को समझ जाती है तो समागम से बच जाती है। मादा प्रायः प्रभावी नर से मधुर सम्बन्ध बनाने की कोशिश में कुछ तरीके अपनाती है जैसे भोजन को उपहार स्वरूप देना एवं स्वीकार करना। वह धीरे-से नर के हाथों से या मुँह से भोजन छीन लेती है और नर की प्रतिक्रिया देखती है। उसकी शान्त प्रतिक्रिया योग्य नर के चुनाव में महत्वपूर्ण होती है। मादा नर से भोजन की उन सामग्री को छीनती है जो आसपास सुलभता से उपलब्ध रहती है। जैसे, पेड़ों की कोमल पत्तियाँ या बहुतायत में उपलब्ध फल आदि। इसमें भोजन को प्राप्त करना महत्वपूर्ण नहीं है। भोजन

का लेन-देन नर के व्यवहार की परीक्षा करने का एक आसान तरीका है। प्रत्येक नर की प्रतिक्रिया भिन्न होती है। कुछ गुस्से में भोजन वापस छीन लेते हैं, तो कुछ सहनशील बने रहते हैं। अन्त में, मादा उनके व्यवहार को समझकर यौन साथी का चयन करती है। अपने साथी के चयन के लिए मादा का ऐसा परीक्षण उनकी आश्चर्यजनक विश्लेषणात्मक बुद्धि-मानी का द्योतक है!

हमने मादा के साथ ज़बरदस्ती करने वाले अनेक उदाहरण देखे हैं जिनमें ताकतवर नर कई बार सेक्स करने में सफल हो जाते हैं। परन्तु अनेक प्रजातियों की मादाओं ने अपनी कुछ रणनीतियों से नर के आक्रामक व्यवहार से बचने के तरीके भी निकाल लिए हैं।

पसन्द को गुमराह करने वाले कारक

सेक्स के लिए जोड़ीदार का चयन अधिकतर शारीरिक और व्यवहारिक स्थिति को समझने के बाद ही होता है। परन्तु पर्यावरण के अनेक कारक निर्णय को गड़बड़ा और गुमराह कर सकते हैं और चयनित जोड़ीदार को परखने में उलझा सकते हैं। एक निश्चित स्थिति में जो चीज़ हमें अच्छी लगती है, सम्भव है कि परिवर्तित परिस्थिति में वह खराब लगने लगे। इसे 'प्लास्टिसिटी' कहते हैं।

पारिस्थितिकी या जैविक कारकों या दोनों में परिवर्तन के कारण जन्तुओं के यौन-व्यवहार या कार्यिकी में होने वाले परिवर्तन को प्लास्टिसिटी कहते हैं। मतलब यह है कि वातावरण के कारक भी पसन्दीदा साथी को खोजने के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। प्रजनन के लिए भेजे गए सन्देश भी तभी काम के रहते हैं जब परिवेश की परिस्थितियाँ अनुकूल हों।

नर फिडलर क्रैब (केकड़ा) में यौन द्विरूपता होती है। नर के सामने वाले पंजों में से एक पंजा आकार में बड़ा होता है तथा दूसरा छोटा। जबकि मादा के दोनों पंजे छोटे होते हैं। नर छोटे पंजे का उपयोग भोजन ग्रहण करने के लिए करता है। बड़े पंजे को हवा में हिलाकर-लहराकर मादाओं को रिझाता है। यह नर का यौन चयनित लक्षण है। अन्य नरों को यह डराता है तथा नरों से युद्ध होने पर बड़े पंजे को हथियार की तरह इस्तेमाल भी करता है। ये केकड़े



चित्र-8: *नर फिडलर क्रैब। इनमें यौन द्विरूपता होती है। नर के सामने वाले पंजों में से एक पंजा आकार में बड़ा होता है तथा दूसरा छोटा। नर बड़े पंजे को हवा में हिलाकर-लहराकर मादाओं को रिझाता है।*

समतल एवं सपाट कीचड़ के खुले स्थानों में रहते हैं। जहाँ दूर तक कोई भी ज़मीनी उभार या टीला नहीं होता है। केकड़ों की दृष्टि भी इसी प्रकार के मैदानी हालातों के लिए अभ्यस्त होती है। जब वैज्ञानिकों ने नियंत्रित वातावरण में इन केकड़ों पर प्रयोग किया तो पाया कि मादा नरों में बड़े पंजों की मौजूदगी और उन्हें तेज़ी-से लहराने की अदा को पसन्द करती है।

अब समझें कि किस प्रकार परिवेश में परिवर्तन से मादा नर से दूरी बना लेती है। नर कीचड़ खोदकर गहरे बिल बनाते हैं और बिल बनाते समय निकली हुई मिट्टी से छोटे-छोटे टीले बन जाते हैं। कुछ नर उन केवल दो सेमी ऊँचे टीले पर खड़े होकर मादा को पंजा हिलाकर सेक्स के लिए पटाने की कोशिश करते हैं किन्तु मादा उन्हें पसन्द नहीं करती। फिर चाहे नर का पंजा बड़ा हो या इशारा तेज़ी-से लहराकर किया जा रहा हो। निष्कर्ष यह है कि मादा स्वयं की ऊँचाई के बराबर के इशारों का जवाब ही देती है। मादा के इस निर्णय से शारीरिक रूप से सम्पन्न नर भी अपनी प्रेमिका को नहीं पा सकते।

प्रश्न यह उठता है कि अगर ऐसे नरों को प्रेमिकाएँ नहीं मिलती हैं तो वे ऊँचाई पर खड़े होते ही क्यों हैं? शायद इसका कारण यह है कि टीलों पर खड़े नर शिकारियों को बड़े दिखते हैं तो वे उन पर हमला नहीं करते या वे ऊँचाई से खतरा पहले ही भाँप लेते हैं। यह उनका सुरक्षा का उपाय है। मादा के दृष्टिकोण से देखें तो समतल भूमि या ज़्यादा गहरे बिल सम्भवतः प्रेमिका को ज़्यादा आरामदायक लगते हों। किन्तु देर-सबेर ऐसे नापसन्द नरों को भी सेक्स का अवसर मिलता है और आनुवांशिक विभिन्नताएँ बनी रहती हैं। किन्तु वे यौन प्राथमिकता तो खो ही देते हैं। इस उदाहरण से यह स्पष्ट है कि मात्र दो सेमी ऊँचाई से ही मादा के यौन व्यवहार में कैसा प्रतिकूल परिवर्तन होता है।

कई उदाहरणों को देखकर अब कुछ-कुछ अन्दाज़ तो लग ही गया कि चाहे इन्सान हों या अन्य जीव, मादाएँ आखिर अपने पार्टनर नर में क्या-क्या देखती हैं।

विपुल कीर्ति शर्मा: शासकीय होल्कर विज्ञान महाविद्यालय, इन्दौर में प्राणिशास्त्र के वरिष्ठ प्रोफेसर हैं। इन्होंने 'बाघ बेड़स' के जीवाश्मों का गहन अध्ययन किया है तथा जीवाश्मित सीअर्चिन की एक नई प्रजाति की खोज की है। नेचुरल म्यूज़ियम, लंदन ने सम्मान में इस प्रजाति का नाम उनके नाम पर *स्टीरियोसिडेरिस कीर्ति* रखा है। वर्तमान में, वे अपने विद्यार्थियों के साथ मकड़ियों पर शोध कार्य कर रहे हैं।